अध्याय–द्वितीय
(सम्बन्धित शोध साहित्य का पुर्नरावलोकन)

2.1 सम्बन्धित साहित्य के अवलोकन का महत्व :–

(1) ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए यह आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता का यह ज्ञान हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहाँ पर है, वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है ।

(2) पूर्व साहित्य के अवलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के सम्बन्ध में अर्नादृष्टि प्राप्त हो सकें ।

(3) पूर्व अनुसंधान के अध्ययन से अन्य सम्बन्धित नवीन समस्याओं का पता लगता है ।

(4) सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानों को नवीन दशाओं में लाने की आवश्यकता होती है।

(5) किसी अन्य अनुसंधानकर्ता के द्वारा यदि वही अनुसंधान कार्य भली प्रकार किया गया हो तो हमारा प्रयास निरर्थक साबित होगा ।

अतः उपर्युक्त कारणों को देखने से यह ज्ञात होता है कि साहित्य के अवलोकन का अनुसंधान में बड़ा महत्व है ।

2.2 भारत में किए गये शोधकार्य :–

(1) **कोरडर, (1975)** ने अधिगमकर्ता की त्रुटियों की अर्थवत पर महत्वपूर्ण चर्चा प्रस्तुत की है। कोरडर का विश्लेषण इस महत्वपूर्ण धारणा पर अवलंबित है कि मातृभाषा अधिगम और द्वितीय भाषा अधिगत में कोई मूलभूत भेद नहीं है । शिशु द्वारा मातृभाषा अधिगम की प्रक्रिया की चर्चा करते हुए उन्होंने लिखा है कि ''मातृभाषा अधिगमकर्ता बालक से कोई भी यह अपेक्षा नहीं रखता कि वह आरंभिक स्थिति से ही उन्हीं रूपों का उत्पादन करें, जो प्रौढ़ों के अनुसार शुद्ध या अविचलित हों। हम उसके अशुद्ध वाक्यों को इस बात का प्रमाण मानते है कि वह भाषा संप्राप्ति की प्रक्रिया में है और भाषा विकास को किसी बिन्दु पर उसके भाषा ज्ञान का विवरण प्रस्तुत करने वाले के लिए महत्वपूर्ण प्रमाण वस्तुतः त्रुटियाँ ही जुटाती है ।'' बालक मातृभाषा अधिगम प्रक्रिया में नियमों को न्यून करता है और इस प्रकार वह सरलता भाषा के अधिगम आरंभ करता है । द्वितीय भाषा अगिमकर्ता के लिए भी यही बाते लागू होनी चाहिए ।

(2) **अग्निहोत्री, –(1979)** ने छोटे बच्चों में भाषा विकास पर शोध कार्य किया । उन्होंने अध्ययन किया कि भाषा विकास पर विशेषकर सामाजिक, आर्थिक स्तर, लिंग और जन्म जाति का क्या प्रभाव पड़ता है । इन्होंनं इस अध्ययन के द्वारा यह पाया कि सामाजिक, आर्थिक स्तर और

लिंग के आधार पर उनमें भाषा विकास की हुए में कोई अंतर नहीं होना है ।

(3) **मिश्रा,**– (1982) ने सामाजिक शैक्षिक स्तर के सन्दर्भ में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की भाषा सम्पन्नता का अध्ययन नामक विषय पर शोध कार्य किया तथा इस अध्ययन का यह निष्कर्ष निकला कि, भाषा का संरचनागत विकास सामाजिक शैक्षिक स्तर से प्रभावित नहीं होता है । मानक भाषा के दृष्टिकोण से वर्तनी त्रुटि पर माता–पिता की उच्च शिक्षा का प्रभाव चौथी कक्षा तक सार्थक रूप से पड़ता है ।

(4) **एस सारसअम्मा,** (1984) ने 'अहिन्दी भाषी कर्नाटक राज्य में कक्षा आठवीं स्तर पर विद्यार्थियों का हिन्दी के आधारभूत – शब्दभण्डार का अध्ययन।' नामक विषय का अध्ययन कर अग्रलिखित प्रकार के निष्कर्ष प्राप्त किए –

(i) हिन्दी के आधारभूत शब्द भण्डार में छात्र–छात्राओं का प्रदर्शन समान रहा । लेकिन छात्राओं का प्रदर्शन छात्रों की अपेक्षा ज्यादा नहीं है ।

(ii) कन्नड एवं अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं का हिन्दी आधारभूत शब्द भण्डार में कोई विशेष महत्वपूर्ण अंतर नहीं है । लेकिन अंग्रेजी माध्यम में पढ़ रहे छात्र–छात्राओं का आंशिक रूप से कन्नड माध्यम में पढ़ रहे छात्र–छात्राओं की अपेक्षा श्रेष्ट है ।

(iii) हिन्दी के आधारभूत शब्द भण्डार में शासकीय तथा नीजि विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं में कोई विशेष अंतर नहीं है ।

(iv) हिन्दी के आधारभूत शब्द भण्डार में ग्रामीण, शहरी तथा अर्धशहरी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं के प्रदर्शन में कोई विशेष अंतर नहीं है । लेकिन अर्धशहरी छात्र–छात्राओं का प्रदर्शन ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं का आंशिक रूप से श्रेष्ठ है ।

(5) **आनन्द,** (1985) ने कक्षा 5 के विद्यार्थियों का लेखन में प्रभाव एवं वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों का निदान दिल्ली के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में उपचारात्मक अध्ययन नामक विषय पर शोध किया। इस शोध के निष्कर्ष निकला कि, वर्तनी में गलती का कारण मुख्यता सही तरीके से न बोल जाना । अक्षरों का सही उच्चारण उम्र के बढ़ने से कोई सुधार का न होना पाया गया इसका कारण

उच्चारण की सही क्षमता की जागृति पढ़ाने की कमी के द्वारा होना पाया गया ना कि उम्र का अन्तर से सबसे अधिक भूलने का कारण अक्षरों का अनुचित रूप से व्यवहार में लाना ।

(6) देसाई, –(1986) ने कक्षा 4 के विद्यार्थियों की भाषा योग्यता का निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षा पर एक प्रोजेक्ट लिया जिसका आधार पूर्व की कक्षाओं 1,2,3 का अधिगत स्तर था । इसमें शोधकर्ता ने कक्षा 3 की हिन्दी भाषा पुस्तक का विश्लेषण किया और कठिन शब्दों की एक सूची तैयार की । इसके आधार पर एक परीक्षण तैयार किया गया । न्यादर्श के रूप में कक्षा 4 के 162 विद्यार्थियों जो अहमदाबाद में दो नगर निगम की शालाओं एवं दो नीजि शालाओं में पढ़ रहे विद्यार्थियों लिया गया । यह निष्कर्ष पाया कि :–

1. पूर्व की कक्षाओं में जो विद्यार्थियों ने भाषा में सीखा उसमें अनेक दोष है जैसे– लेखन त्रुटियाँ, मिसिंग लेटर, खराब लिखाई, गलत वाक्य रचना आदि थे ।
2. अध्यापकों द्वारा नियमित कक्षाएँ न लेने के कारण यह दोष पैदा हुए थे साथ ही अभिभावकों का अपने बच्चों के प्रति रूचि न लेना था विशेष रूप से नगर निगम की शालाओं में ।

7. कुमारी, नन्दा, बी – (1992) ने मद्रास क्षेत्र के केन्द्रीय विद्यालयों में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को हिन्दी लेखन में आने वाली त्रुटियों का निदानात्मक अध्ययन । नामक विषय का अध्ययन कर निम्नलिखित निष्कर्षों की प्राप्ति की जो इस प्रकार हैं –

(1) कुल न्यायदर्श से 75% त्रुटियों में छह प्रकार की व्याक्रणीय क्षेत्र में त्रुटियाँ की जो इस प्रकार है ।

त्रुटियाँ	–	प्रतिशत	त्रुटियाँ	–	प्रतिशत
पदव्याख्या	–	97.05%	विरामचिह्न	–	88.07%
वाक्यांश	–	84.07 %	एक शब्द	–	81.69%
विश्लेषण एवं संश्लेषण	–	80.86 %	मिलाना	–	77.65%

(2) विद्यार्थियों ने हिन्दी भाषा उपलब्धि, बुद्धि, तथा सामाजिक–आर्थिक स्थिति के आधार पर नकारात्मक सहसम्बन्ध की प्रतिशत में त्रुटियाँ की गई हैं ।

2.3 एम.एड. स्तर पर हुए शोधकार्य :–

1. कुसुम, रस्तोगी, (1969) ने हिन्दी की अशुद्धियों का विवेचनात्मक अध्ययन नामक विषय पर शोध किया । इस अध्ययन का निष्कर्ष यह निकला कि–मध्यम वर्गीय परिवारों के बच्चें ही अधिक अच्छा कार्य करते हैं । अशुद्धियों के लिए उत्तरदायी तीन बाते पायी गई –

    1. बुद्धि
    2. माता–पिता का इस और ध्यान न देना ।
    3. स्वयं बच्चों की लगन

2. भावना, बाजपेयी, (1990)– ने माध्यमिक स्तर पर भोपाल नगर के छात्र–छात्राओं के हिन्दी उच्चारण दोष का समीक्षात्मक अध्ययन नामक विषय पर शोध कार्य किया गया । इस अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि छात्र–छात्राओं की मात्रा सम्बन्धी त्रुटियों में सार्थक अंतर है। शब्द की गलतियों, मन से पढ़े गए शब्द, जिन शब्दों को छोड़ दिया गया उनके बीच कोइ सार्थक अंतर नहीं पाया गया । भिन्न भिन्न भाषियों के कारण भी स्पष्ट ज्ञान नहीं होने के कारण उनके उच्चारण में दोष पाया गया ।

3. नूरजहाँ, मलिक, (1997)– ने अपने लघु शोध प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं में हिन्दी विषय की चयनित दक्षताओं का तुलनात्मक अध्ययन । नामक विषय पर शोध किया । इस अध्ययन का निष्कर्ष यह निकला कि, शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं में शब्दों और वाक्यों को देख कर लिखने की दक्षता ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों की बालिकाओं में अधिक है । अक्षरों एवं शब्दों को सही आकार व क्रम तथा उनके बीच की दूरी में अंतर की दक्षता ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्र की बालिकाओं में अधिक है । चयनित दक्षताओं में 80% दक्षता उपलब्धि का शहरी बालिकाओं में 40% व ग्रामीण बालिकाओं में 30% दक्षता हासिल कर ली है । इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की दक्षता उपलब्धि बेहतर है । इसके कारण कई हैं । इनमें प्रमुख कारण है निर्धनता, सामाजिक संकीर्णता, शिक्षा के प्रति अरूचि, अपने व्यवसाय या घरेलू कार्यों में लगा लेना, शालाओं का शैक्षिक वातावरण आकर्षक न होना आदि ।

4. मिनी श्रीवास्तव, (1999) ने प्राथमिक शिक्षा के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा उपलब्धि एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन नामक विषय का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि, दक्षता

व्यावहारिक व्याकरण के अंतर्गत 30 प्रतिशत बच्चें मात्राओं में त्रुटि करते हैं, 14 प्रतिशत बच्चें वाक्यों तथा शब्दों में त्रुटि करते हैं, लिंग भेद में बच्चे अंतर नहीं कर पाते केवल 66 प्रतिशत बच्चों ने यह दक्षता हासिल की है । यह भी ज्ञात होता है कि शिक्षक भी इस ओर ध्यान नहीं देते, उन्हें चाहिए कि बच्चों को श्रुति लेख दे तथा श्यामपट पर भी अभ्यास कार्य करवाएँ ।

5. अमिता सिंह, (2000) ने कक्षा 6 के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाईयों के उपाय नामक विषय पर अध्ययन किया और अंत में निष्कर्ष निकाला कि विद्यार्थियों करना, मुहावरों का वाक्य–प्रयोग, शब्दों से वाक्य बनाना, विश्लेषण, लिंग–भेद, मुक्त–लेखन एवं संख्या लेखन में कठिनाई है । अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी हिन्दी भाषाओं में अधिक अधिगम कठिनाई का अनुभव करते है ।

6. छाया सक्सेना, (2001) ने प्राथमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं की हिन्दी में वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों का अध्ययन नामक विषय का अध्ययन कर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए –

(1) कक्षा तीन, चार, व पाँच में अध्ययनरत बालक–बालिकाओं में परीक्षण द्वारा यह पाया गया कि लापरवाही, जल्दबाजी तथा लेखन न करने की आदत के कारण लेखन में कठिनाई अनुभव की गई।

(2) मात्रात्मक तथा बिन्दुगत की त्रुटियों की अशुद्धियाँ अधिक थी तथा सभी प्रकार की त्रुटियाँ विद्यार्थियों ने लगभग की । असावधानी के कारण त्रुटियाँ पायी गई ।

(3) मातृभाषा तथा अन्य भाषा के कारण भी बालक–बालिकाओं की लेखन में त्रुटियाँ पायी गई।